हिंदी

सुगमभारती

आठवीं कक्षा

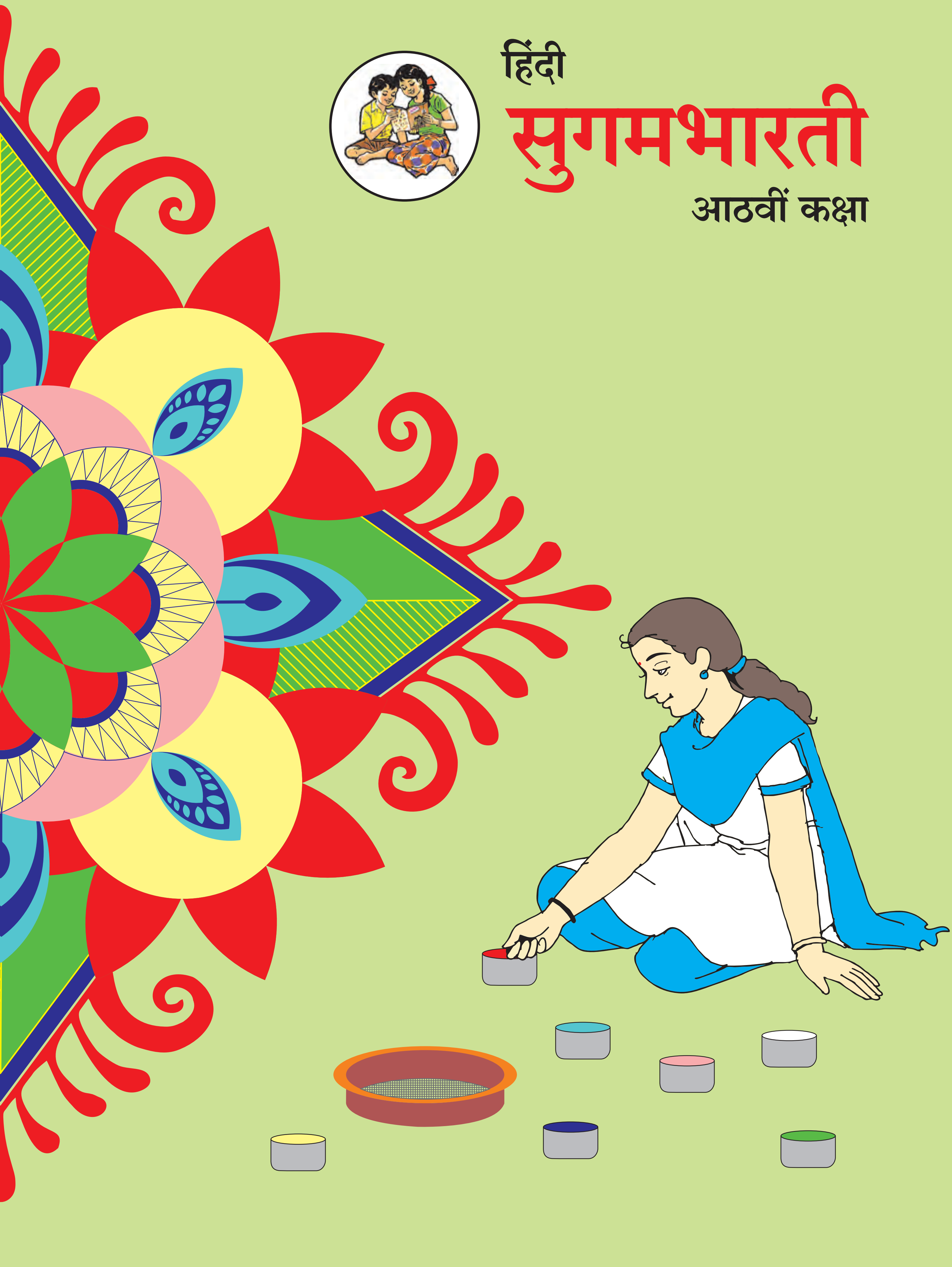

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

हिंदी अध्ययन निष्पत्ति आठवीं कक्षा

यह अपेक्षा है कि आठवीं कक्षा के अंत तक विद्‌यार्थियों में भाषा विषयक निम्नलिखित अध्ययन निष्पत्ति विकसित हो ।

विद्‌यार्थी –

08.LB.01	विविध विषयों पर आधारित पाठ्‌यसामग्री और साहित्य की दृष्टि से विचार पढ़कर चर्चा करते हुए द्रुत वाचन करते हैं तथा आशय को समझते हुए मानक लेखन तथा केंद्रीय भाव को लिखते हैं ।
08.LB.02	हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री को पढ़कर तथा विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं, सर्वेक्षण, टिप्पणी आदि को प्रस्तुत कर उपलब्ध जानकारी का योग्य संकलन, संपादन करते हुए लेखन करते हैं ।
08.LB.03	पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हुए गुट चर्चा में सहभागी होकर उसमें आए विशेष उद्‌धरणों, वाक्यों का अपने बोलचाल तथा संभाषण में प्रयोग कर परिचर्चा, भाषण आदि में अपने विचारों को मौखिक/लिखित ढंग से व्यक्त करते हैं ।
08.LB.04	किसी सुनी हुई कहानी, विचार, तर्क प्रसंग आदि के भावी प्रसंगों का अर्थ समझते हुए आगामी घटना का अनुमान करते हैं, विशेष बिंदुओं को खोजकर उसका संकलन करते हैं ।
08.LB.05	पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं तथा किसी परिचित/अपरिचित के साक्षात्कार हेतु प्रश्न निर्मिति करते हैं तथा किसी अनुच्छेद का अनुवाद एवं लिप्यंतरण करते हैं ।
08.LB.06	विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त उपयोगी / आलंकारिक शब्द, महान विभूतियों के कथन, मुहावरों / लोकोक्तियों-कहावतों, परिभाषाएँ, सूत्र आदि को समझते हुए सूची बनाते हैं तथा विविध तकनीकों का प्रयोग करके अपने लेखन को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास करते हैं ।
08.LB.07	अपने पाठक और लिखने एवं लिखित सामग्री के उद्‌देश्य और अन्य दृष्टिकोण के मुद्‌दों को समझकर उसे प्रभावी तरीके से लिखते हैं ।
08.LB.08	सुने हुए कार्यक्रम के तथ्यों, मुख्य बिंदुओं, विवरणों एवं पठनीय सामग्री में वर्णित आशय के वाक्यों एवं मुद्‌दों का तार्किक एवं सुसंगति से पुन:स्मरण कर वाचन करते हैं तथा उनपर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल लिपि में अभिव्यक्ति करते हैं ।
08.LB.09	भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का यथावत वर्णन, उचित विराम, बलाघात, तान-अनुतान के साथ शुद्‌ध उच्चारण, आरोह-अवरोह, लय-ताल को एकाग्रता से सुनते एवं सुनाते हैं तथा पठन सामग्री में अंतर्निहित आशय केंद्रित भाव अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. २९.१२.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

हिंदी

सुगमभारती

आठवीं कक्षा

मेरा नाम ________________ है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

HULPKP

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन-अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१८
तीसरा पुनर्मुद्रण : २०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य - अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील - सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला - सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी - सदस्य
श्री रामहित यादव - सदस्य
श्री संतोष धोत्रे - सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी - सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे - सदस्य
डॉ.अलका पोतदार - सदस्य - सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री संजय भारद्वाज
सौ. वृंदा कुलकर्णी
सौ. रंजना पिंगळे
डॉ. प्रमोद शुक्ल
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
डॉ. शुभदा मोघे
श्री धन्यकुमार बिराजदार
श्रीमती माया कोथळीकर
श्रीमती शारदा बियानी
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
डॉ. वर्षा पुनवटकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
डॉ. शैला ललवाणी
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. रीता सिंह
सौ. शशिकला सरगर
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर

प्रकाशक :

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

निमंत्रित सदस्य

श्री ता.का सूर्यवंशी
श्रीमती उमा ढेरे

संयोजन :

डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : अपूर्वा मिलिंद बारंगळे
चित्रांकन : मयूरा डफळ, श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री संदीप आजगांवकर, निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2021-22/QTY.
मुद्रक : M/S

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो,

तुम सब पाँचवीं से सातवीं कक्षा की हिंदी सुगमभारती पाठ्यपुस्तक से अच्छी तरह परिचित हो और अब आठवीं हिंदी सुगमभारती पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे । रंग-बिरंगी, अतिआकर्षक यह पुस्तक तुम्हारे हाथों में सौंपते हुए हमें अतीव हर्ष हो रहा है ।

हमें ज्ञात है कि तुम्हें कविता, गीत, गजल सुनना-पढ़ना प्रिय लगता है । कहानियों की दुनिया में विचरण करना मनोरंजक लगता है । तुम्हारी इन भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए इस पाठ्यपुस्तक में कविता, गीत, गजल, पद, दोहे, वैविध्यपूर्ण कहानियाँ, लघुकथा, निबंध, हास्यकथा, संस्मरण, आधुनिक गीत, खंडकाव्य अंश, यात्रावर्णन, एकांकी, महाकाव्य अंश, भाषण, पत्र आदि साहित्यिक विधाओं का समावेश किया गया है । ये विधाएँ मनोरंजक होने के साथ-साथ ज्ञानार्जन, भाषाई कौशल-क्षमताओं के विकास, राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ करने एवं चरित्र निर्माण में भी सहायक होंगी । इन रचनाओं के चयन के समय आयु, रुचि, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक स्तर का सजगता से ध्यान रखा गया है ।

अंतरजाल एवं डिजिटल दुनिया के प्रभाव, नई शैक्षिक सोच, वैज्ञानिक दृष्टि को समक्ष रखकर 'श्रवणीय', 'संभाषणीय' 'पठनीय', 'लेखनीय', 'मैंने समझा', 'कृति पूर्ण करो', 'भाषा बिंदु' आदि के माध्यम से पाठ्यक्रम को पाठ्यपुस्तक में प्रस्तुत किया गया है । तुम्हारी कल्पनाशक्ति, सृजनशीलता को ध्यान में रखते हुए 'स्वयं अध्ययन', 'उपयोजित लेखन', 'मौलिक सृजन', 'कल्पना पल्लवन' आदि कृतियों को अधिक व्यापक एवं रोचक बनाया गया है । इनका सतत अभ्यास एवं उपयोग अपेक्षित है । मार्गदर्शक का सहयोग लक्ष्य तक पहुँचने के मार्ग को सहज और सुगम बना देता है । अतः अध्ययन अनुभव की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों का सहयोग और मार्गदर्शन तुम्हारे लिए निश्चित ही सहायक सिद्‌ध होंगे ।

आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि तुम सब पाठ्यपुस्तक का समुचित उपयोग करते हुए हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि दिखाते हुए आत्मीयता के साथ इसका स्वागत करोगे ।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-०४

पुणे
दिनांक : १८ अप्रैल २०१८, अक्षयतृतीया
भारतीय सौर : २९ चैत्र १९४०

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	हृदय का उजाला	गीत	रमाकांत यादव	१-२
२.	उसी से ठंडा, उसी से गरम	हास्य कथा	डॉ. जाकिर हुसैन	३-५
३.	गाना-बजाना	विवरणात्मक निबंध	रामवृक्ष बेनीपुरी	६-८
४.	श्रद्‌धा और प्रयास	पत्र	काका कालेलकर	९-११
५.	सुनो और गुनो	आधुनिक दोहे	गोपालदास सक्सेना 'नीरज'	१२-१३
६.	और प्रेमचंद जी चले गए	संस्मरण	डॉ. रामकुमार वर्मा	१४-१६
७.	हींगवाला	संवादात्मक कहानी	सुभद्राकुमारी चौहान	१७-२०
८.	कदम मिलाकर चलना होगा	नवगीत	अटलबिहारी वाजपेयी	२१-२२

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	पंपासर	खंडकाव्य का अंश	नरेश मेहता	२३-२४
२.	परोपकार	लघुकथा	श्रीकृष्ण	२५-२६
३.	आत्मनिर्भरता	वैचारिक निबंध	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	२७-२९
४.	तुम मुझे खून दो	भाषण	नेताजी सुभाषचंद्र बोस	३०-३२
५.	संतवाणी	पद (महाकाव्य का अंश)	संत मीराबाई गोस्वामी तुलसीदास	३३-३४
६.	प्राकृतिक सौंदर्य से पूर्ण 'अल्मोड़ा'	यात्रा वर्णन	डॉ. इसरार 'गुनेश'	३५-३७
७.	सम्मेलन अंगों का	एकांकी	श्रीप्रसाद	३८-४०
८.	जिंदगी का सफर	गजल	नंदलाल पाठक	४१-४२
	व्याकरण तथा रचना विभाग एवं भावार्थ			४३-४६

१. हृदय का उजाला

– *रमाकांत यादव*

जलाते हो क्यों तुम दीप स्नेह भर-भर,
अपने दिलों के दीप तो जलाओ ।
सजाते हो तुम सब उजालों से घर क्यों,
अँधेरे हृदय में उजाला तो लाओ ।

कहीं तो दीवाली, कहीं सूनापन है,
कहीं झूमें खुशियाँ कहीं गम ही गम है,
उन दीन-दुखियों के दुख को मिटाओ,
अपने दिलों के दीप तो जलाओ ।

न फुलझड़ियाँ चमकाओ, न फोड़ो पटाखे,
भोजन नहीं जिनके, दे आओ जा के ।
उनके जखमों पर मलहम लगाओ,
अपने दिलों का दीप तो जलाओ ।

जला दीप तुमने अँधेरा मिटाया,
पर क्या किसी भूखे को भोजन कराया ?
उजालों की चाहत कभी न रही जिनकी,
रोटी तुम उनको जाकर खिलाओ ।

पहला ही दीपक बहुत है अँधेरे को,
अनगिन दीप मिल न दिल को सजाते ।
उनके दिलों से पूछो तो जाकर,
जखमों पर स्नेहक जो लगा तक न पाते ।

बुझे दिल में उनके ज्योति जलाओ,
अँधेरे हृदय में उजाला तो लाओ ।

——०——

परिचय

जन्म : १९६३, जौनपुर (उ.प्र.)
परिचय : रमाकांत यादव जी हिंदी भाषा के सजग रचनाकार हैं । आपकी रचनाएँ राष्ट्रीयता और नैतिकता के भावों से परिपूर्ण हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'हृदय का उजाला', 'यह समय कब तक रहेगा', 'गीत जिंदगी के', 'अपनापन' आदि रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत गीत में कवि रमाकांत यादव जी ने हमें दीपक जैसा बनने के लिए प्रेरित किया है । आपका मानना है कि त्योहारों, उत्सवों के अवसर पर दिखावा करने की जगह भूखे पेट को भोजन, खुले तन को वस्त्र देना, दीन-दुखियों की सेवा करना अधिक श्रेष्ठ है ।